E-ISSN 2582-5429

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April - June 2021 Vol 02 Issue VI

E- ISSN 2582-5429

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April-June 2021 Vol.02 Issue V SJIF Impact- 5.54

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April-June -2021

Vol.02 Issue V

Scientific Journal of Impact Factor (SJIF) Impact-5.54

Scientific Journal Impact Factor

TOGETHER WE REACH THE GOAL

International Impact Factor Services IIFS *2.875*

International Society for Research Activity (ISRA)
Journal-Impact-Factor (JIF) *ISRA JIF- 1.312*

Digital Online Identifier-Database System

Akshara Publication

Plot No 143 Professors colony,

Near Biyani School, Jamner Road, Bhusawal Dist Jalgaon Maharashtra 425201

E- ISSN 2582-5429

MRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April-June 2021 Vol.02 Issue V SJIF Impact- 5.54

Sr.No	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
16	छप्पर उपन्यास में सामाजिक चेतना	कैलाश प्रधान	75-77
17	डॉ. भीमराव आंबेडकर के शैक्षिक विचार	प्रा .डॉ. सुरेखा प्रेमचंद मंत्री	78-80
18	बुजुर्गों का अकेलापन : शेष कादम्बरी	प्रा.डॉ. नेहा अनिल देसाई	81-83
19	कोरोना मुक्ति का मार्ग: योगासन और प्राणायाम	प्रा.डॉ. मल्लिनाथ बिराजदार	84-87
20	सृजनात्मकता का साध्य : असाध्य वीणा	श्रुति पाण्डेय	88-91
21	हसीनाबाद: नारी सपनें देखती नहीं सपनें बुनती हैं।	सुस्मिता सेन	92-94
22	मुक्तिबोध के काव्य पर मार्क्सवाद का प्रभाव	प्रा .डॉ. हनुमंत येदू गायकवाड	95-98

मराठी विभाग

Sr.No	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
23	समकालीनतेच्या संदर्भात उत्तम कांबळे यांचे कादंबरी लेखन	डॉ. राजेंद्र मुंढे	99-101
24	पत्रात्मक साहित्यः मानवी मनाचा उत्कटाविष्कार	डॉ. पांडुरंग भोसले डॉ. सचिन रूपनर	102-106
25	श्री छत्रपती शिवाजी तालुका वाचनालयाचा इतिहास	प्रा. डॉ. पी. एस. सोनवणे दुर्गेश मोतीलाल खैरनार	107-110
26	जॉन लॉकचा अनुभववादी ज्ञानसिध्दांत	डॉ. उध्दव न. कांबळे	111-113
27	नवीन कृषी कायदे : एक विश्लेषणात्मक अभ्यास	प्रा.डॉ. जितेंद्र दगडूत लवारे	114-116

उर्दू

Sr.No	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
28	اردو افسانے کا باوا آدم: منشی پریم چند	ڈاکٹر شیخ آفاق انجم	117-120

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April-June 2021 Vol.02 Issue V SJIF Impact- 5.54

18

बुजुर्गोंका अकेलापन : शेष कादम्बरी

प्रा.डॉ. नेहा अनिल देसाई
सहायक प्राध्यापक,
राजर्षि छत्रपति शाहू कॉलेज ,क़दमवाड़ी रोड ,कोल्हापुर महाराष्ट्र
Mail id:- drnehaadesai@gmail.com Mobile:- 9145333549

इक्कीसवीं सदी में आर्थिक और प्रौद्योगिकी के विकास के साथ सामाजिक व्यवस्था में तेजी से परिवर्तन हो गया है। नए युग के भौतिक जीवन पद्धति ने पारिवारिक स्नेह को ठेस पहुंची हैं। उच्च शिक्षा के कारण युवा पीढ़ी यांत्रिकीकरण की ओर आकर्षित हो गई हैं। नई पीढ़ी में विदेशी कंपनियों में ज्यादा से ज्यादा रोजगार ढूंढना और वही बस जाने की होड़ मची हुई है। युवा पीढ़ी के स्वतत्रंता से स्वेराचार की मुक्त जीवन पद्धति ने परिवार के बुजुर्ग लोग उपेक्षित जीवन जीने के लिए बाध्य हुए है। भारत की परंपरागत सांस्कृतिक विरासत के बारे में माना जाता हैं कि पारिवारिक जीवन में आपसी संबंध प्रेमयुक्त होने आवश्यक हैं। परिवार के संयुक्त रूप को आदर्श मानते थे लेकिन पारिवारिक जीवन में अपने कर्तव्य पालन के बाद समाज सेवा करने का मार्ग दर्शाया गया है। भारतीयों के प्राचीन ग्रंथों के आधार पर कहा जाता हैं,मनुष्य जीवन में गृहस्थाआश्रम के बाद वानप्रस्थ आश्रम का मार्ग दर्शाया है। जैसे – " गृहस्थाआश्रम के बाद व्यक्ति वानप्रस्थ आश्रम 50)से हो में प्रवेश करता (वर्ष की आयु 75 जिसमें वह परिवार , कुल ,और समाज को त्यागकर निर्लिप्त भाव से संपूर्ण समाज की सेवा करता है।" 1 स्पष्ट है कि गृहस्थाआश्रम में रहकर सभी कर्त्तव्य सफलता पूर्वक पुर्ण करने के साथ जीवन का नए मोड़ को स्वीकार करना आवश्यक है। वर्तमान समय की सामाजिक व्यवस्था में निजी अहंकार और स्वार्थी प्रवृत्ति बढ़ गई है इसके परिणामस्वरूप पारिवारिक माहौल में बदलाव हो गए हैं। आमदनी बढ़ाने के साथ साथ भूमंडलीकरण ने विलास पुर्ण जीवन भी परोसा है। इस विलासितापूर्ण जीवन में बुजुर्गों के हिस्से में उपेक्षा और अकेलेपन की व्यवस्था आई है। भारतीय संस्कृति और सामाजिक सुरक्षा व्यवस्था में बूढ़ो की देखभाल युवा पीढ़ी कर्तव्य पालन करने के साथ प्रेम पूर्वक करती थी।लेकिन इक्कीसवीं सदी ने अर्थव्यवस्था के बदलते तेवर ने दो पीढीयों में अंतर पैदा किया है। अलका सरावगी का शेष कादम्बरी उपन्यास बुजुर्गो के अकेलेपन की समस्या को अधोरेखित करता है।

हिंदी उपन्यासकार अलका सरावगी के 'शेष कादम्बरी' उपन्यास की नायिका रूबी गुप्ता सत्तर साल की बूढ़ी औरत हैं। रूबी के पति की मृत्यु हो गई है। उनकी बड़ी बेटी गौरी युगांडा में है और छोटी बेटी जया अमेरिका में बस चुकीहै। दोनों बिटिया रुबी की कभी पूछताछ तक नहीं करती है। परिणामस्वरूप रुबी अपने जीवन के अकेलेपन का मन ही मन में विचार करने लगती है कि , " ढ़लती उम्र का अकेलापन शायद नही समझ सकती। रुबी गुप्ता से ज्यादा अकेलेपन को किसने लंबे संग साथ में जाना है- दुनिया और अपने होने की समझ के साथ - साथ उपजा ठेठ अकेलापन।" 2 स्पष्ट है कि रुबी अपनी बेटिया होकर भी मन में अपना कोई नहीं है की व्यथा प्रकट करती है। रुबी दी जब भी अकेली बैठती थी तब उसे बचपन से लेकर आज तक की यादे सताती है।

रुबी का जन्म एक साधारण आर्थिक स्थिति के परिवार में हुआ था लेकिन वह छोटी सी थी तब उसकी बुआ ने उसे गोद लिया था। बुआ ने रुबी को गोद लेने की रस्म पूरी न कर केवल मौखिक रूप में गोद लेने की बात कही थी परिणामस्वरूप रुबी दोनो परिवार में उपेक्षा सह रही थी। जीवन की ऐसी परिस्थितियों में उसका अपना कोई नहीं था। जन्म देने वाले और पालन करने वाले माता पिता अलग थे। उसकी परवरिश अमीर परिवार में हुई थी लेकिन उस अमीरी पर हक नहीं कर सकती थी। पिताजी ने पढें लिखे युवक से रुबी की शादी कर दी। उनका ससुराल मायके की तुलना में अधिक गरीब था। रुबी ने खुद को ससुरल वालों के अनुकूल बनाने की कोशिश की। लेकिन पति के मृत्यु के बाद ससुराल वालों ने सभी प्रकार के संबंध ही तोड़ दि। अब रुबी की लड़कियों की शादी हो गई है। रुबी के साथ पुराना नोकर कालूचरण उसकी पत्नी शामा और एक गूँगी बेसहारा लडकी सायरा रहती है।

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April-June 2021 Vol.02 Issue V SJIF Impact- 5.54

रुबी को व्यक्तिगत जीवन से उत्पन्न समस्याओं के कारण आत्महत्या करने के विचार आए थे। रूबी दी अपने खालीपन को भरने के लिए अपने अतित की ओर झाँकती है। उसकों व्यक्तिगत दुखों से ऊबकर आत्महत्या करने की इच्छा हुई थी। उस समय रुबी का स्वगत कथन है कि " जब-तब उनके मन में ऐसी इच्छा होती कि मर जाएँ। आत्महत्या करने जैसी कोई बात वे बेशक नहीं सोचती थी मगर कुछ ऐसा मन होता कि अचानक किसी दुर्घटना में उनका देहांत हो जाए चालीस की उम्र के नजदीक पहुँचकर उन्हें हर पल लगने लगा था कि जीवन बहुत ज्यादा जी लिया है। किसी को उनकी कोई खास जरूरत नहीं है और उनके बिना सबका जीवन चल सकता है। " 3 इससे स्पष्ट होता है कि रुबी का अतित का जीवन भी अकेलेपन में गुजर गया था। आत्महत्या के विचारों से समाज कार्य शुरू करने के बाद मुक्ती मिली थी। परामर्श संस्था के माध्यम से सामाजिक और पारिवारिक हिंसा का शिकार हुई नारी को न्याय दिलाने का प्रयास करती थी।

परामर्श संस्था में सहायता मांगनेसविता नाम की लडकी आती थी। वह परिवारिक समस्याओं से पीड़ित है। सविता के जीवन में माँ की हत्या के बाद पिता की दूसरी शादी , सौतेली माँ से प्रताड़ना , भाई भाभी ने अपने संसार से बाहर निकाल देना इन सभी कारणों के साथ जीवन जीने की असफल कोशिश आदि समस्याएँ हैं। सविता के पिताजी नया घर ढूँढने उसे साथ लेकर जाते हैं। लेकिन सविता के मतानुसार पिताजी को पड़ोसी घर में अकेली बेसहारा औरत ही चाहिए। सविता पिताजी की घिनौनी विचारधारा से तंग आती है। रुबी दी को सविता के पिताजी की हरकत के बारे में पता चलता है। लेकिन सविता के कथन से रुबी दी असहमत है , " उन्हें अपने जीवन का विराट सूनापन दिखाई पड़ा। पच्चीस सालों में न जाने कितनी बार रातों को उठकर उन्होंने अपने से पूछा है कि वे किसके लिए जी रही है? इस संस्था का काम या और भी दूसरे काम कभी उस शून्य को नहीं भरते जो उनके साथ हर वक्त चिपका रहता है।" 4 रुबी दी सविता के पिताजी के रवैये का समर्थन करती है क्योंकि वह वृद्धावस्था में आनेवाला अकेलापन भुगत चुकी है। रूबी ने अपना अकेलापन परामर्श संस्था में आनेवाली महिलाओं में बाँट दिया है। उसका अकेलापन ही मौन और चेतनाहीन जीवन जीने का कारण है बेटियों की उदासीनता एवं आत्मीयता अभाव भी।

रुबी की सहेली शंकुतला निसन्तान है और अकेलेपन के डर से देवर के परिवार में बेसहारा बनकर रहती है। रुबी अकेलेपन की समस्या से पीड़ित व्यक्तियों के समाचारों को समाचार पत्र में खोजती है। सुबोध भट्टाचार्य की आत्महत्या का समाचार पढ़कर बैचेन हुई थी। उसके अलीपुर के घर के पड़ोस में ही डॉ. भट्टाचार्य रहते थे। भट्टाचार्य की आत्महत्या का कारण जानने के लिए आगे समाचार पढ़ती है। पैंसठ साल के भट्टाचार्य ने पंखे से फंदा लटकाकर फांसी लगाई थी। उनकी आत्महत्या की चिट्ठी में लिखा था कि उनकी आत्महत्या को अन्य किसी को जिम्मेदार न ठहराया जाए। रुबी के मतानुसार उनकी पत्नी का देहांत दो साल पहले ही हो गया था परिणामस्वरूप भट्टाचार्य ने अकेलेपन से उबकर आत्महत्या की होगी। क्योंकि पुरुषों की जिंदगी जीने की पद्धति अलग होती है परिवार के और समाज के किसी कार्य में खुद को व्यस्त नही कर सकते है। इसप्रकार के हादसों के समाचार पढ़कर रुबी सोचती है कि " अभी उनके दिल, जिगर, किडनी दिमाग सब सही सलामत हैं। मरने के कोई आसार नजर नहीं आते। कही सौ साल की उम्र पाई हो , क्या करेगी ? रुबी दी ने अपनी हस्तरेखाओं की ओर देखा। यह जीवन रेखा है। अरे, यह तो अन्तहीन सी लग रही है। पूरी हथेली पारकर मुडकर कलाई तक चली गई है। पहले कभी इस तरफ ध्यान नहीं गया। पर करेंगी क्या इतना जीकर ? आत्महत्या की बात तो कहीं दूरदराज से भी उनके मन में नहीं है जीवन है तो उसका कोई अर्थ है, जरूर समझ में आए न आए। उसे अपने मन से खत्म करना कभी सही करने में नहीं हो सकता। वे कभी डॉक्टर सुबोध भट्टाचार्य की तरह आत्महत्या नहीं कर सकती, चाहे जो हो। " 5 स्पष्ट है रुबी दी अकेली समय बिताते आत्महत्या पर विचार करती है, क्योंकि जीवन के प्रति उत्साह एवं आनंद की कमी उन्हें महसूस होती थी। रुबी दी कभी कभी उपेक्षित जीवन और वृद्धावस्था के अकेलेपन से तंग आकर आत्महत्या करने की सोचती है और दूसरे ही पल इस विचार को गलत एवं अनैतिक ठहराकर छोड़ देती है। रुबी अपनी वसीयत में अपने अकेलेपन के साथीयों को हिस्से बॉट देती है।प्रस्तुत उपन्यास में अधोरेखित की गई अकेलेपन की समस्या के बारे में प्रो. मृत्युंजय उपाध्याय का कथन है कि "अकेलेपन की भयावहता और त्रासदी से निजात पाने के लिए प्राकृतिक मानुषिकता की महती आवश्यकता है। एकाकीपन की चाहत और इसे गर्वस्फीत कर दिखाने की आज की प्रवृत्ति के समक्ष रूबी द्वारा दूसरों को अपनानेमानवीय और उदार है। ,उसे वारिस बनाने और अपनी संपत्ति का कुछ अंश दे देने का निर्णय व्यावहारिक , आज इसके बिना हमारे संबंध लड़खड़ा जाते है और अकेलापन प्रेत6 "सा साथ डोलने लगता है।-प्रस्तुत उपन्यास में संस्कार

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April-June 2021 Vol.02 Issue V SJIF Impact- 5.54

और अकेलेपन के द्वंद्व में समाज सेवा का नया रूप समाधान के साथ दिखाई देता है। संस्कारों के ढ़हने को आज के आधुनिकीकरण युग में शुष्क होते संबधों को दर्शाने की कोशिश अलका जी ने की है।

निष्कर्ष :

बुजुर्गों के अकेलेपन की समस्या दिनों दिन बढ़ती हुई दिखाई देती है । प्राचिन भारत की परंपराओं का सयुंक्त परिवार का स्वरूप था । इस परंपरा में परिवार के बुजुर्ग व्यक्तियों की जिम्मेदारी सहजता से निभाई जाती थी । भौतिक जीवन के सुखों प्रति अगली पीढ़ियों की दौड़ ने बुजुर्गों के प्रति उदासीनता आई है। यह पारिवारिक वातावरण को तहस नहस कर रही है। नई सदी के ज्ञान-विज्ञान और भौतिक साधनों के पीछे की दौड़ में बच्चों को माता पिता से भी दूर किया है। इसका एक कारण विलासपूर्ण जीवन के पीछे की अंधी दौड़ भी है। बुजुर्ग व्यक्तियों ने भी अपने निजी अनुभव को समाज की सहायता के लिए उपयोग करना आवश्यक है। । कहना गलत न होगा कि पाश्चात्य सभ्यता के साथ अपने स्नेह का दायरा बढ़ाना आवश्यक है । भारतीय समाज व्यवस्था में स्त्री-पुरुष को समान स्तर पर नहीं रखा है। पुरुषों के कार्य भी अलग हो गए हैं। इसी कारण स्त्री और पुरुषों की अकेलेपन की समस्या भिन्न है। परिवार में बुजुर्ग स्त्री छोटे कामों में दिलचस्पी लेकर को खुद को बँधकर रख सकती है लेकिन इसके विपरित पुरुष की स्थिति अकेलेपन में होती है ।

संदर्भ सूची:-

1. वीरेंद्र प्रकाश शर्मा – समाजशास्त्र विश्वकोश , जयपुर ,पंचशील प्रकाशन : प्र . सं . 2011 , पृ. 33
2. अलका सरावगी – शेष कादम्बरी ,नई दिल्ली ,राजकमल प्रकाशन : प्र. सं. 2004 ,पृ.11
3. वही.पृ. 27
4. वही, पृ. 11
5. वही , पृ. 197
6. सं.डॉ. शर्मा बाबूलाल 'वैचारिकी 'द्वैमासिक नवंबर – दिसम्बर,2015 ''हिंदी उपन्यास में यथार्थ : अभिव्यक्ति और प्रामाणिकता – प्रो. मृत्युंजय उपाध्याय पृ. 56